9/9/22

पाठ - 9

कबीरदास जी

उत्तर-① कबीरदास जी यह कहना चाहते हैं कि किसी व्यक्ति की पहचान अथवा मोल उसकी योग्यता और गुणों के अनुसार तय होता है न कि, कुल, जाति धर्म आदि से। उसी प्रकार ईश्वर का वास्तविक ज्ञान जरूरी है।

उत्तर-② कबीरदास जी यह कहना चाहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए। हमें ईश्वर की भक्ति में दिखावा नहीं करना चाहिए।

उत्तर-③ कबीरदास जी यह कहना चाहते हैं कि व्यक्ति या प्राणी चाहे वह जितना भी छोटा हो उसे तुच्छ समझकर उसकी निंदा नहीं करनी चाहिए। हमें सबका सम्मान करना चाहिए।

उत्तर-④ " जग में बैरी ----------

उत्तर-⑤ यहाँ 'आपा' अहंकार और 'घमंड' का अर्थ देता है।

उत्तर-⑥ (i) आपा = अहंकार
आत्मविश्वास = अपने ऊपर विश्वास

(ii) आपा = अहंकार
उत्साह = काम करने का जोश

उत्तर-⑦ " आवत गारी ----------
मनुष्य के एक समान होने के लिए सबकी सोच का समान होनी चाहिए।

उत्तर ⑧ कबीर के दोहो को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षात ज्ञान दिया गया है।

उत्तर ⑨ ग्यान = ज्ञान, जीभि = जीभ, पाँऊ = पाँव, तलि = तले, आँखि = आँख
बरी = बड़ी।